१४८

पाश्चिमनुम्भेश्वरी देगुलीपूजा

ASHA ARCHIVES 3196

हनमादवाक्केन ॥ पश्चिमदत्तलिखावाचयाय ॥ नमस्तुभ्यंस्वरी
दयूलि ॥ स्तुनूतमस्काच ॥ न्यासं ॥ नेऊ क्ष्म्ल्व्र्यूँ अस्त्रायफट् ॥
करसोधनं ॥ क्ष्म्ल्व्र्यूँ ह्रीं गुरुयनम ॥ क्ष्म्ल्व्र्यूँ ह्स्ख्फ्रें न ऊं न्यायं
स्वाहा ॥ क्ष्म्ल्व्र्यूँ म ह्स्ख्फ्रें श्रमायवौषट् ॥ ह्स्ख्फ्रें ह्स्ख्फ्रें क्ष्म्ल्व्र्यूँ अना
मिकाय ह्स्ख्फ्रें ॥ ह्स्ख्फ्रें क्ष्म्ल्व्र्यूँ कनिकायं वषट् ह्स्ख्फ्रें ॥ क्ष्म्ल्व्र्यूँ अ
स्त्रायफट् ॥ ह्स्ख्फ्रें करतं न्या ह्स्ख्फ्रें स ॥ थनीष्ठं न्यास ह्स्ख्फ्रें ॥ ह्स्ख्फ्रें

उल्लयागपूजा ॥ उल्लयागमनायपादुकां ॥ क्ष्म्ल्व्र्यूँ म्ल्व्र्यूँ ह्स्रां उ
लयागकहालिकायपादुकां ॥ अर्घं ॥ आवाह्य ह्स्ख्फ्रें ह्स्ख्फ्रें ॥ ख
नमुद्रा ॥ उग्रयभ्युयविघ्नदूतोधवाविमह ह्स्ख्फ्रें ह्स्ख्फ्रें स्वाय
श्री प्रयादयादु ॥ श्रामंवलोनस्त्राबाहन ॥ ह्रुं दं श्र स्वाहिकं श्रवा
हयामि ॥ ह्रूं ह्रूं नन्कमगुह्याद्यादिदवयादुकां ॥ नेऊनन्नामनाय

पादुकां ॥ ऐंॐ मयूराम्ब श्रीनाय पादुकां ॥ ऐंॐ मूर्धाम्ब श्रीनाय पादुकां ॥ ब
ॐ क्षांँ क्षींँ क्षूंँ क्षैंँ क्षौंँ क्षःँ ॰ क्षत्रपानाय पादुकां ॥ श्रांक्रीं कुलपुत्रव टूक
नाथाय पादुकां ॥ ऐंॐ सांँ सींँ सूंँ सैंँ ऽस्फूसाग्राक्रूवसा ऽस्त्र्यैनाय पादुकां ॥
स्वाहा कनादि ॥ स ङ्गें नीदं शुद्धा ऐंॐ मुद्राकृष्य ४ ह्रूं भा श्रीनाय पादुकां । वृषा
श्रीनाय पादुकां । मयूराम्ब श्रीनाय पादुकां । मनूग्राम्ब श्रीनाय पादुकां । म

ह्रियाम्ब श्रीनाय पादुकां । सञाम्ब श्रीनाय पादुकां । प्रेत्राम्ब श्रीनाय पादुकां । नना
श्रीनाय पादुकां । स्वच्छा नीखलि माश्रे हैवव नाथ पादुकां ॥ कीमाछ्क
छ्वीमूर्न हेवव नाथ श्रीहि नाय पादुकां । यं क्रा माली यं शु हेवव ना
थ श्रीहि न पादुकां । टं वें क्षू वीक्रा य हेवव नाथ श्रीहि न पादुकां । हैवा
वाचाहि उ स्म कै हेवव नाथ श्रीहि न पादुकां । यं न्द्राय शाक पालीस

ह्रैं नवनाथ महासिद्ध पादुकां। ऐं चामुण्डा खण्ड ह्रैं नव महासिद्ध पादुकां

। श्रीं महाकाललक्ष्मी महाकाल ह्रैं नवनाथ महासिद्ध पादुकां॥ थनीवलि॥ महि

मा महानाथ पादुकां॥ श्रीं काममहानाथ पादुकां॥ ध्यान॥ तुम्बल्लवीमहाद

वी कृष्णवनीरु क्रियन्त्रना सर्वा कृष्णसमुत्पाङ्गी ग्रां ठिमिकृष्णभायमा।

ऋषायरुतरुडादवीयीनवकृष्णनन्तुकृष्णसर्व्वनजमयिक्ष्वादिग्र

नृयाम कारुडना॥ त्रिनंत्रेवमहार्यो दीर्काद्दमानावनं विना॥ श्वनवम

यधिकानी नानयूक्षयमा क्रिमा॥ रवङ्गश्चक्रिनथावानी छ्रकृष्णमूकलं

नथावकीयं यथनाकाष्ठचक्रकृष्णयंचयक्रिशु॥ रुठकं याग्यामश्रोयं न

कं निनर्ष्यनंवठं॥ उमहंलोतनीयानं यावयवांमकृषहुडीं श्रीसमन

नमानृश्चमहिवामकृनि। रुदयनिक्षुजनसर्वदंश्यावीनामनं॥ त्र

स्माकलिपूनामायमक्लावा अंकनीक्षिन. ५वं थाल्वामह्लायवीदुर्ग्जे
दवीनभामुन ॥ ॐ सिध्यानपूयनम ॥ धर्म्मायनम ज्ञानायनमर
वैराग्यायनम. ॐ ऐश्वर्य्यायनम. अधर्म्मायनम अज्ञानायनम अ
वैराग्यनायनम अनैश्वर्य्यायनम ॥ बलि ॥ महिषासनायपादुकी
सिंहासनायपादुकां ॥ ह्रीं श्रीं नज ज्म्ल्व्र्यूं म्ल्व्र्यूं साजयतुभ्यध्यनीर्दर्थी

अवायादुकीपूजयामि ॥ त्रियाञ्जलि ३ ॥ षडंगसमर्पय ॥ बलि ३ ॥
स्वाकमह्लायबलिनदूनके ॥ आवाहनादि ॥ यानीविन्दु मनुजयस्म ॥ धूप
॥ दीप ॥ जाप ॥ त्रिदय ॥ ज्म्ल्व्र्यूं म्ल्व्र्यूं स्वाहा १० ॥ ज्म्ल्व्र्यूं म्ल्व्र्यूं स्वाहा ॥ ज्म्ल्व्र्यूं म्ल्व्र्यूं
स्वाहा जप ॥ निर्वानया हूं हूं जप ॥ क्रों ज्म्ल्व्र्यूं म्ल्व्र्यूं य ॥ श्री ह्रीं ती
सेवकों. स्यामानकः वंशूक. अनुग्रहीस्य ज्म्ल्व्र्यूं म्ल्व्र्यूं दि ॥ श्री नयम

॥ नकानक ॥ ॐ नियश्रीमतुभ्यध्वनीदत्तलिसमार्प ॥ ॐ ह्रू
हृमग्रीलिखामहाकालदत्तलि ॥ ॐ हूं नमःस्वाहा ॥ न्यासयाय ॥ ॐ ह्रां
अंगुष्ठायहुं ॥ कोलमाधवन ॥ ह्रां अंगुष्ठायनमः ॥ ॐ ह्रीं तर्जन्यायस्वा
हा ॥ ॐ ह्रूं मध्यमायवौषट् ॥ ॐ ह्रैं अनामिकायहुं ॥ ॐ ह्रौं क
निष्ठकायवौषट् ॥ ह्रः अस्त्रायफट् ॥ ह्रां हृदयायनमः ॥ ॐ ह्रीं शि

रसेस्वाहा ॥ ॐ ह्रूं शिखायवौषट् ॥ ॐ ह्रैं कवचायहुं ॥ ॐ ह्रौं ने
त्रत्रयायवौषट् ॥ ॐ ह्रः अस्त्रायफट् ॥ ॐ लयात्र पूजा ॥ ॐ लया
त्रमूलायपादुकां ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ॥ लिखं ष्ठद्धन्यशा ॐ लयात्रः
कालिकायपादुकां ॥ ह्रू ह्रू ह्रू सर्वाङ्गनमःपूजा ॥ आवाहनादि ॥
धेनुमुद्रा ॥ शिखानाथाय विद्महे ष्ठद्ध चाय धीमहि तन्नो ष्ठद्ध

यथानुयाग ॥ ऊर्द्धपात्राम्नाय पादुकां ॥ ह्स्ख्फ्रें ह्स्ख्फ्रें ह्स्ख्फ्रें शिवाध्वद्ध प्र
र्द्धपात्रहृत्कर्णिकाय पादुकां ॥ यथागन ॐ ॐ ॐ सं पूजा ॥ आ
वाहनादि धेनुमुद्रा ॥ हृन्मध्ये ॥ आत्मपूजा ॥ श्रीसंवर्त्ता ■ आवाहन
॥ हृदये ध्यावाहि ह्स्ख्फ्रें आवाहयामि ॥ ऊर्ध्वनन्दनसमनुत्रय दिव्य पादुकां
॥ नवनाथस्थानाय पादुकां ॥ नवग्रहयुगानाय पादुकां ॥ नवग्रहसाम
नाय पादुकां ॥ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः ह्सां ह्सीं ह्सूं ह्सैं ह्सौं ह्सः पानाय पादुकां ॥ श्रीं क्रीं ह्र
लयक्षयहृत्कर्णाय पादुकां ॥ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्ख्फ्रें ह्सौं श्रीकुब्जिकायै नमः
य पादुकां ॥ आवाहनादि ॥ तर्पणं ॥ दक्षिणजंघामूर्द्धादक्ष ॥ यथाम्ना
य पादुकां ॥ ध्यान ॥ नवमहाचक्रनामसमारूढं नवककूटबद्धमण्डलं ॥
नवकोष्ठानि स्थापय नमामि चन्द्रलाद्व लिना पूज्यां यथाक्रम ध्यानकर्णं

महाकायमहाबला। व्याघ्रचर्म्मपरिधानी सिंहचर्म्म नतियदी न
तयमव्याक्षिनकाल नूपूरादि विरहृ षिनी ॥ खङ्गहस्त नकाहस्तेय. यात्र
विचूख ह्लाषाक विद्युत्का गिमहानडे. कार्व्वं प्राहान षिनि। ब्रह्म वि
ष्णुमहेन्द्रानी मिन माघ्य कपादुकी ॥ स्वालिवाउ महेहू त्वानस. ह्वाल
कनवाकूल ॥ हृ नग्र न यिमायानी किङ्किनावमकूर्से ॥ छम लान्नग्र

महागौर्द्दं याञ्जिगनमन्नुनं ॥ नित्यमान महाप्रयसाकानीहि नका
म्यया. श्वायहँ घामहाकाली हैं नयें हृ वन छवनें. यं॰य१०७॥ छ्रुया
वायि छ्रय यहाम माहिन ॥ सर्व्वसिद्धिमवाप्नोति. सदा विजय वर्द्धनं ॥
ॐ सिंधान व्रयनम ॥ ॐ क्रौं हूँ तुक ह्रूं नयालायपादुकी ॥ छूलिन
ह्रें हें नवाय पादुकी ॥ ह्रूं ह्रें नवाय पादुकी ॥ यैं हुँ हें नवाय कपादु

की ॥ क्रोडहूं नवाययाद्‌की ॥ उल्मुहूंहूं नवाययाद्‌की ॥ कपालि
महूं नवाययाद्‌की ॥ त्रिशनहूं नवाययाद्‌की ॥ मीङ्गलहूंहूं नवाय
याद्‌की ॥ बलि ॥ त्रियाउलि ३ ॥ नेउ कूं महाकाल महाहूं नवाय सर्व
शत्रुप्रमर्द्दनाययाद्‌की ॥ षत्रुगन ॥ बलि ॥ ध्रुमामनाययाद्‌की ॥
क्षूं कूं क्रूं छोलि खास्वद्वन्द्व महाहूं नवाययाद्‌की ॥ षत्रुग

नमस्यश्चय ॥ बलि ॥ त्वाक महाबलिं नयनक ॥ आवाहनादि ॥ खड्गमु
द्रानस्य ॥ तर्पन ॥ नमश्रीनाथाय ॥ त्रिलाबम्य ॥ मिस्वाद्यञ्जुलि समाय
॥ [illegible]बा ॥ ४ ॥ २ नमोडम्रवञ्जुयद्यञ्जलि ॥ धाहून महाकाव ॥ म्लछुदनव्छमायन्ह
॥ केलसायनं ॥ नेउ ॐ क्रीं नाउ प्रधकनिष्किकायवौषट ॥ क्रूं उगयञ्जुञना
मिकाय स्वाहा ॥ नेउ त्रिपुमर्द्दनी मध्यमाय वौषट ॥ नेउ ध्रुं कूं सीयानहाउरन क्रूं

न्यायफ्रूँ ॥ श्रीमाहँसमनगत्रयायवषट ॥ मस्यहनत्र्ह्मभ्रयस्फट ॥ अवमभ्र
कर्णन्यास ॥ जलपात्रस्नायपादुकी ॥ ॐ ह्रीँ नाउग्रध फ्रूँ उग्रचण्डान्यमर्द्दन
फ्रूँ स्फ नयम ह्रल्मा मीं शिवम स्यूह्न जश्राजलपात्रहृ ना लिकायपादुकी ॥ षडं
दंसन मर्य पञ्चय ॥ उग्रचण्डाय विह्मह दूर्गादेवी धामह तन्नायचण्डी प्रचोद
यात् ॥ श्री भैरवर्णो श्वावाहन ॥ कुटंश्वावाहि कौ श्वावाहयामि ॥ षूंसुनन्कम

सुश्राङ्घयिदवपादुकी ॥ नगासनायपादुकी ॥ मयूरासनायपादुकी ॥ मू
षासनायपादुकी ॥ ह्रांह्रींह्रूंह्रैं ह्रांह्र ४ ह्र गुयासनायपादुकी ॥ श्रीकुलयुः
गवद्धकनाथपादुकी ॥ अस ॥ स्त्र्ह्रूँ श्रीकुलस १ श्वसनायपादुकी ॥ आवा
हन ॥ गङ्गनीदंभुगज मुद्रादर्श ॥ ह्रीं सागनायपादुकी ॥ वृषासनायपादु
की ॥ मयूरासनायपादुकी ॥ गरुडासनायपादुकी ॥ महिषासनायपादु

कां ॥ गजामसनाय पादुकां ॥ प्रगामसनाय पादुकां ॥ नगामसनाय पादुकां ॥ ओ
ऋग्वीशचन्द्रसन्धवक्षायनाथदवीश्चलिनाक्रहेनवाय पादुकां ॥ ॐ हुं श्री प्रचण्ड आम
हृष्यजीयदवीचूचूहेनवाय पादुकां ॥ ठठ श्रीयनुयज्ञाकामातीदवीयनुहेन
वायपादुकां ॥ ममश्रीयनुनायकावेक्रूवीयदवीस्वाकारुहेनवाय पादुकां ॥ ठेठेश्री
यनुआवावाशीयदवीठन्म ठेहेनवायपादुकां ॥ तुंतुं श्रीयनुयलीतुंन्यायनीद

वीकयालिमहेनवायपादुकां ॥ डाडो श्रीयनुयूपायामन्नुआयदवीकिखनहेन
वायपादुकां ॥ थ्रींथ्रूं थ्रूंमिर्वं सिकामल्लनक्षीर्मकावहेलवायपादुकां ॥ थ
नवलि ॥ आठानव ⬩ कपादुकां ॥ भूनकामसनायपादुकां ॥ कन्वामसनायपा
दुकां ॥ नगामसनायपादुकां ॥ प्रजामसनायपादुकां ॥ कृगामसनायपादुकां ॥
कनिकामसनायपादुकां ॥ पक्वामसनायपादुकां ॥ मह्निवामसनायपादुकां ॥

गिं ह्रां सनाय पादुकां। घ्रुं ह्रां सनाय पादुकां। निम्रूं ह्रां सनाय पादुकां। नमः४ श्रीं ह्रैं
व शु या ग्राय नमः श्रीं ह्रीं पादुकां। थंनि। ने ॐ ह्रीं नाउ पय क्रूं उग्रव शान्य
मर्द्दनी क्रूरू सदाव क्षरल्लामीशं स म ग्रुरू नत्थु ह्रायपादुकां ॥ त्रियाउ लिश
घ ठं ग॥ मग्रुरू नत्थु ह्रायरूरू। ल्याक ह्नव वलि नदूनकं ॥ आवाहना
दि। यानी मुद्रा विघ्न मुद्राय ध्व॥ धुय दीय मिदव॥ क्रूं मह्लाकानाय स्वाहा

॥ जप॥ ह्रां स्वाहा॥ जप॥ क्रूं स्वाहा॥ जप॥ भान श्रीसंवत् मसकाल माकहँ ञ्जुव
॥ श्रु नठी आदि॥ नप॥ प्रिन ध्वना॥ न कान क॥ उग्रय शुध वायन समाक॥
॥ ॥ श्न भा उग्रव श्रुाद यु लि॥ वीउरू काहल॥ कू थ्यां थें याय॥ ॥
श्न श्रा गि द्धि लक्ष्मि मिय बाचनं॥ जुनूनमस्वाग॥ नउ खुं मकलगक्रू यम
थेनी दवीछ ह्रायरूठ पादुकां॥ ४॥ ॐ क्रूं ह्रं ह्रः वज्रयीरुजम स्वाहा॥ नँय नमकू

लक्ष्मलमयलहँ क्ष्म्रँ ह्रः स्वाहा॥ खुँ पचमहे सिनि छय्गुञायैम॥ नैँ उँ खुँ निर्वा
नमार्गेदनडैँ न्यायस्वाहा॥ नैँ खुँ पिषमा ष्ठयष्ठलम निम थ्वमायर्वा षड्॥ नैँ उँ
सकलदूलिनानिष्कक थदल नीष्ठना सियक्रूँ॥ उँ खुँ सर्वा पदाक्षा विमनलि
कनिष्ठकायवषह्॥ खुँ सवाच॥ कलीन्याम॥ ॥ खुँ नम॥ सर्व सिद्धि या सिस्था
उर्द्ध यक्र पादुकी॥ खुँ नम ४ सर्व सिद्धि मात्र्स्वायूर्ध्वयक्रनाथ पादुकी॥ खुँ

नमानित्यादिमानन्दद्धिनार्थ्य दक्षिनवक्रपादुकी॥ खुँ गकलकूलयक्रना
यिकार्यंउ रूनयक्राय पादुकी॥ खुँ रुगवर्यं ष्पनुकायालिर्न्य पश्चिमवक्राय
पादुकी॥ खुँ ॐ नम ४ सर्व सिद्धिया सिस्था उर्द्धुयक्राय पादुकी॥ ॥ खुँ पलमहे
सिनि सर्वज्ञानानन्दयाय नम॥ खुँ निर्वान मार्गदहफि सिलम स्वाहा॥ खुँ
विषमाय पूसम निष्ठना दिर्वा अलि आयर्वा षड्॥ खुँ सकलदूलिनालिर्दे

कमदलनिस्थमनुकवचायहुं ॥ खुं सर्व्वापदाम्भावितनजनीष्टच्छ फलकन
तत्रयाययवषट् ॥ खुं लकलणफ्र प्रमर्थनीदवीछ्म्नायस्हं ॥ खुं ऊलयाग ह
म्नाययापादुकां ॥ ॐ ऐं ह्रीं हूं हैं हौं हः ह्रां क्रीं नमः ४ श्री ऊलपात्रहस्त लिकार्यया
दुकां ॥ अवग ॥ आवाह्न धेनुमुद्रा ॥ खुं श्रीसिद्धिलक्ष्मी विफट् नवसादिपाः
महं न ज्ञालक्ष्मीप्रवायदयान ॥ खुं ऋर्घपात्रासनायपादुकां ॥ खुं ग्लूं ग्लू

नथ्रहेनवावषट् ॥ खुं स्वाम४म४यनादयीछमर्नयमश्स्वाहा ॥ ॐ ऐं ह्रीं हूं
हैं हौं हः ह्रां क्रीं नमः ॥ श्री ऋर्घपात्रहस्तनिकार्यपादुकां ॥ अवग ॥ आवाह्नया
निमू ॥ हनलशुद्धि ॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं खुं ग्लूं ग्लौं खुं श्रीं ह्रीं वं ॥ ॐ ह्रीं हूं हैं हौं हः ह्रां क्रीं न
म४ विलयनपादुकां ॥ ग्लूं श्रीनिमलछक्रपादुकां ॥ ग्लूं श्रीविनहस्मपादु
कां ॥ ग्लूं खुं सर्वऊनभाग्लूं हनीपादुकां ॥ ग्लूं ना ग्लूं नाछ्नतछलिका

२व क्लीँ ह्रौँ क्रौँ क्ष्क्ष्मौँ म्ल्व्र्यूँ त्रि धून स्तम्भ ति ॥ अमुकं उच्चाटनाम ॥ सर्व भादनाय स्वाहा ॥ ऊँ यत्र यथ
०८ ॥ नमो ह्रीँ वँ ॥ ह्रूँ अर्कं फट्‌ ॥ श्रावद ॥ गुरु दिन ॥ क्षय थम ॥ सर्व रक्ष यव ॥

ASHA ARCHIVES 3196

ASHA ARCHIVES 3196

नपूष्पपादुकां ॥ ह्रौं श्रौं पादुकां ॥ ३ ॥ विन्दुनय ॥ आवाहन ॥ ख्फ्रें यांमायनायपाद
विखम स्मखस्नयूपिनि । शुनलाकगगाया किशायान्तु यिदम शुल ॥ ॐ दं आवा
हिकं आवाहयामि ॥ भूष नक्रम शुलधीआं दिदवपादुकां ॥ खरु ननामनना
यपादुकां ॥ मयूनामहनायपादुकां ॥ मूमामहनायपादुकां ॥ ॐ ऊं क्रां क्रीं क्रूं
क्रैं क्रौं क्रं क्रः ४ क्रन यानायपादुकां ॥ श्रीक्रीं कुलपूजवहूकना थायपादुकां

॥ श्रां श्रीं श्रूं श्रैं श्रौं श्रः ग्रीं कुमग लेष्मायपादुकां ॥ आवाहनादि ॥ गर्के नीर्दं शुग
ऊमूवादख्य ॥ ख्फ्रें ह्रीं श्रीं लं डायान यीथायपादुकां ॥ ख्फ्रें ह्रीं श्रीं यंडा लंबनयी
आयपादुकां ॥ ख्फ्रें ह्रीं श्रीं लं पूर्नुगिषीनीयीभयपादुकां ॥ ५ ॥ ध्यान ॥ ख्फ्रें महा
भ्रमामहनायपादुकां ॥ ख्फ्रें महाभआमयीलक्ष्मी लम्मिकाख्यायूनयहीं ॥ यक्ष
वक्रायमहकूडां त्रियंयनभाकला ॥ ध्यनवर्मू महादीर्घिमहायशायनिर्छि

नी ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्स्रौं मारुकाष्ठकमण्डलेषु सिद्धियोगिनी संस्थिता ॥ यालिनाम्यालि नि
रानी ॥ वालायुगा कलाताग ना तक्षमाक्ष सन्यागेन यालयस्कन्नयर्द्धगा ॥ ख
चितलेक्षचिक्ष्यक्ष कचिर्त्सहलभक्षनात् ॥ क चिक्षत्राक्ष चित्याल्य स्पानक्षाद्या
ययर्ले ॥ येनामारुवर्णयुक्तामूलगेन्धचिरूछिना ॥ यामीकूगथनाय चि.वन
यारुययालिनी ॥ यामरुक्ष थनखड्ग ईलाक्षधारुकालिनी ॥ याभखद्वांसम म

स्युग्रं दक्षिन स्तुनमूर्लसं ॥ स्थयन कवर्तर्गोदीकत यासवलिन ॥ सव्यरुक्ष
सकसर्व्ये सुस्तुस्मानिनसाहूवं ॥ याभतक स्थलसंधियासहानसेप्रयूलि
सं ॥ एवामप्रर्लसिनादवीउत्मनाद्यासदरुया ॥ एकागाभकरुयनविक्ष्य
व्याप्यवक्षिनी ॥ प्रसंसिनासहादेवी सिद्धिलक्ष्मीउययदी ॥ ॐ ... ध्यानयु
क्तंनम ॥ खुँ ह्रीं ह्रीं सिद्धिलक्ष्मी विघ्नहन वश्यादि सिसह न म्रालक्ष्मी प्रवा

दयात् ॥ बलि ॥ मालामंत्र ॥ ऐं ह्रीं श्रीं ख्फ्रें ह्स्रौं ॐ नमश्च सर्वसिद्धियासि
स्यानमः ख्फ्रें नमः सर्व्वसिद्धिमातृस्थानभानि योदिनानन्दनन्दिनियेनकलकु
लचक्रनायिकायै हंसवर्ये भ्रमणकायालिन्यै नत्त्यर्थी ॥ ॐ ह्रीं क्ष्रूं स्त्रौं ॐ क्लीं क्रौं नमः ग्रं द्रं ख्फ्रें
यमर्द्दिसिनि निर्वानमार्गप्रदविरवभायप्रसमनि सकलदुरितागिक्षकेसयर
नि सर्वोपद्रवक्षपिनत निगलकलभक्ष्यर्थे सिद्धिवीश्वाठाकूर २ हुम २ वज्र २ नयनु

बिनान्कयमारुकसमयणफकसयर २ खाहि २ त्रिगुलनहि ष्वि २ छिन्धि २ खलके
नगातयर २ छूदयर २ गावस्थावसममसकलमनाय थानमाधयर २ यनमकानू
शिकरुशवगिमहारंनवनूयभालिनी त्रियदवलनसिग सकलमन्त्रमान
प्रनगजनवसलदयिमहाकालिकालनामनी ॐ क्ष्रूं उग्रसीदमयनाश्रा
ह्रीं क्रूं २ हूं नाहूं नकन्यैकी ह्रीं श्री क्ष्रूं फ्रु ठ स्वाहा ॥ मालामन्त्र ॥ बलि ॥ त्रिया

ल्लि ३॥ ॐ ह्रीं क्रूं ह्रूं कुं क्रां क्रीं नमः ४ श्री सिद्धिलक्ष्मी देव्यै श्रीपादुकां॥ अष्टांग वलि
॥ खुँ कर्म्मगणपतिनाथ पादुकां॥ खुँ कर्म्म गणपतिनाथ वल्लभाश्री म्वा ३॥
खुँ कर्म्म बटुकनाथ पादुकां॥ खुँ कर्म्म बटुकनाथ वल्लभा श्री पादुकां॥ वलि
॥ खुँ ॐ कामपीठनाथ पादुकां॥ खुँ पूर्णगिरि पीठनाथ पादुकां॥ खुँ क्रूं महाकान
यिलक्ष्मणाननाथ श्रीवा पादुकां॥ खुँ क्रूं महाकानवीरमहाननाथ वल्लभा

श्री पादुकां॥ खुँ सर्व्व संहाननिष्ठ श्री पादुकां॥ खुँ सर्व्व संहानि निवरा कुठेश्वरया
लवल्लभ शाश्री म्वा पादुकां॥ श्मशान वलि॥ खुँ हं सामाय पादुकां श्यादि॥ खुँ श्रुबुश्मा
नायदेवी श्रुलिगीम हं नाय पादुकां॥ श्यादि॥ वलि॥ उ खुँ लिवाय देवी पादुकां॥
खुँ हं गवलीय देवी श्रीम्वा पादुकां॥ खुँ मायाय देवी श्रीम्वा पादुकां॥ खुँ रुद्राय देवी श्री
म्वा पादुकां॥ खुँ किनि २ य देवी श्रीम्वा पादुकां॥ खुँ यिलालिय देवी श्रीम्वा पादु

कां ॥ खुँ यँ मङ्गिक्लाद वीश्र म्यायादुकां ॥ खुँ लक्ष्मँ कमनीय वीश्र म्यायादुकां ॥
खुँ घँ घयपनीय वीश्र म्यायादुकां ॥ खुँ या ज मा नजीद वीश्र म्यायादुकां ॥ खुँ किनि
[illegible] द वीश्र म्यायादुकां ॥ खुँ कां का कि निद वीश्र म्यायादुकां ॥ खुँ तां ता किं नी
द वीश्र म्यायादुकां ॥ खुँ नां ना कि नाय वीश्र म्यायादुकां ॥ खुँ लां ला कि नाय दवीश्र
श्र म्यायादुकां ॥ खुँ कां का कि नाय वीश्र म्यायादुकां ॥ खुँ मां मा कि नाय दवीश्र

म्यायादुकां ॥ खुँ हाँ हा कि नाद वीश्र म्यायादुकां ॥ खुँ याँ य कि नाय वी श्र म्यायादु
कां ॥ थनं वलि ॥ त्रियाऊ त्रि ॥ वँ ऊँ ठुँ ङ्खीँ कूँ हाँ ठुँ ङ्कां क्रां नम ॥ श्री लिङ्गिवर क्ष्मी दवी
श्र म्यायादुकां पूजयामि ॥ ३ थतंगवलि ॥ ठुँ ठुँ सिँ र्द्विँ कँ लँ नीँ हीँ कूँ हँ क्रुँ ठुँ ङ्कां
क्रां नम श्री यज्ञकाली काद वीश्र म्यायादुकां पूजयामि ३ ॥ थतंगवलि ॥ नक्रपञ्च
म्ला य यादुकां ॥ नुऊ क्रां श्र जियकुं का मग ऋालय मित्रि मना आङ्गि क काभ

ष्ठनी देवी मुद्रा लक्ष्मी कि श्रीपादुकां ॥ ॐ ऐं ह्रीं सूर्यचक्रे ज्ञानं भगवती १० षष्ठीननाथ
लिंक वक्र ष्ठनीदेवी वीर्या लक्ष्मी कि श्रीपादुकां ॥ ॐ ऐं ह्रूं भ्रामयचक्र पूर्णगामिनी १०
गद्द नङ्गाद्दि गनाथा लिंक ह्र मालिनी देवी ह्रूं वज्रा लक्ष्मी कि श्रीपादुकां
॥ ॐ ऐं ह्रीं वज्रा चक्र ठ दियान महायी १० वज्रनाथा लिंक श्रीप्रियून सूर्य देवीय
ज्ञ व ह्रा कुल कि श्रीपादुकां ॥ बलि ॥ ॐ ऐं ह्रीं ह्रूं ह्रीं श्रीमहाप्रियूत

हे नवी पादुकां ॥ बलि ॥ त्रियाञ्जलि बलि गम ॥ ह्य शुलि नं माल ॥ षडंग ॥ बलि ॥ मूद्रा ॥
त्याक पशु लिसं ॥ थव२ मन्तुन ॥ त्रियाञ्जलि ॥ बलि ॥ लिसं ॥ त्रियाञ्जलि ॥ बलिपू
स्तक सं त्रियाञ्जलि ॥ बलि ॥ मूनस ॥ लिवावलिविय ॥ निर्वाण ॥ त्याक सहावलि ॥
आवाहनादि ॥ मूद्रा ॥ नमस्त्रीनाथय ॥ ॥ निगवलि पूजा ॥ आवाहन ॥ संवर्त
॥ नैदव ॥ मूद्रा ॥ बलि त्रियाञ्जलि मूस ह्य शुलि मनं माल ॥ ॐ ऐं ह्रूं ह्रीं मूल

क्वाँ सिथ वीछ म्वा पादुका ॥ अर्घ्य ॥ बलि ॥ ल्वाक मह्वाय बलि नघुनक ॥ धूप ॥ दि
प जाप त्रिधय ॥ कुमालिनी ॥ नहि ॥ उग्रयन्त्र ३८ ॥ मूलमन्त्र ५४० ॥ निर्वा
ण ५४० ॥ होम ॥ स्वस्ति ॥ सिंदुरपू १ ॥ पादयी ॥ उत्कुला ॥ सिद्धिपना ॥ जाप्तामा क्व
का ॥ पाचक्वे श्वे ॥ त्रन्तुवचें ॥ नमस्कार व दपू १ ॥ यथादान ॥ देवा लिस्थाय ॥
गोपक्षय ॥ समयस्नान ॥ नपन ॥ नकानक नमस्कार ॥ पून ४ नर्घ्यस

लिखा ॥ बलि बिग ॥ ॐ सिसि दिल स्वाद गुलि समाप्त ॥ ॥ ॥
दगामा नक्वचींद गुलि ॥ लिसन ह्वाय ॥ यनसूद्धक्व न ॥ स्नान ॥ गुरु नमस्कार ॥
न्यास ॥ जलार्घ्य पागपूजा ॥ कूनगुद्विग्र सपूजा ॥ आवाहन ॥ त्रिधय ॥ दथु क्वथ ॥ उ
वयहुके ॥ खवयाम ॥ मुद्रा ॥ मूलमन्त्र ॥ थाप्ति ॥ वाम सूत्र ॥ आवाहयामि विन्दु मुद्रा ॥ आरु
गल क्व ॥ ध्यान ॥ ॐ ह्रीं गफवा मिकवा वर्ज्ञ नाना वल्य प्रा हिमा ॥ दि व्यवज्रपनिध्वन

दिव्यानि कालसाहिता ॥ किंचिद्विकृतलोलाक्षी ॥ कपूतमनिभायुगितं लमालाविभू
षिता ॥ पादमालावलीविनाशनादघ्नहाकान्ताया नवकनकसुरा ॥ सर्वानि कालम
युक्तानि दिव्याविसमयुता ॥ खड्गपात्र थसक्तं तुष्टी कृष्णधर्मगुह्यावनदंतमत्र
कीर्त्तिमा भूलयागमूले हिता ॥ दक्षिणेन कलावर्ता यथा लोकतानथागुह्या ॥ कुच
कीर्षनूह स्नायगवार्थी था मूलो हिता ॥ वामांघ्र तं निहत्या खड्गाकं गयाल

कं विन्दुमुद्राण थासिदं ॥ सिंहासनायमिछिता ॥ ऋष्यश्लिष्टांलि निश्चिन्त्र म हिमेव
मतामूर्त्ति नज्ञीवाननिर्ग्गतिर्दत्यं मत्तावलयपाक्रमा ॥ हृदयात्मिनाशिगुरुभं विश्वासा
लिनासहा ॥ नर्वथ्य त्वामदेवी सर्व्वकामसफलप्रदा ॥ ले साध्या ग्रन्थनूह स्नाय खड्गिंप्र
मनविना ॥ ततवशायपञ्चायच क्षोभाय शुनायिकाय भायभुवनीर्येव ॥ यशनुयापि
यन्त्रिका ॥ भाय नाशुभूनाकृ धूनीजाशुक्राय थूमिंकां ॥ वीणानुपा तुभ्यं ह्रयाञ्

रिधक्षुकलि छिना ॥ चलिवालसमायुक्त मायान्तुं ॐ ह्र मगुल ॥ प्रियाउलि ॥ ॐ न्त्रु
धि ॥ उयादि ॥ नूद्रयंदादि ॥ व्रक्षादि ॥ षड्ताकिनि ॥ वतुयीथ ॥ नियाउलि ॥ उव खव
सृष्ठाखनादि ॥ नूद्रयंदा थ्यक्षाउव ॥ खव थ्यक्षा ॥ उथेय ॥ मूलसनियाउलि ॥ नि
वी ॥ लाकमलवलि ॥ धुपदीप ॥ जाय ॥ स्तुति ॥ थ्रखद ॥ संवली ॥ व्रक्षानि ॥ याठम्या ॥
दर्याव्र शेमार्कलु ॥ याथ्वी ॥ यथावान ॥ धवथ्यालिवाय ॥ स्मश ॥ मर्यन ॥ नकाश ॥

।वलि खवलायाठ विसउन ॥ ॐ निमाशथ्वलि दयलिसमायं ॥ ॥ ॥

टनिलायम्या ॥ याना यामिकल्या ॥ न्यासं विधाय ॥ थ्वथद वीग धयूथ्यादि मूय नसयूथ्य
॥ शानलउलनियदिनं ॥ स्वर्ग्रदियात्र थंउलम निकव्या ॥ मनूयद्या ॥ मूलविद्या
त्रिनकिमन्त्र मलमृवाद्य ॥ ॥ मनिनयावनंदवी ला नलमूमगाकनं ॥ उसंनियदिनं
रक्षागलनयनमथ्वनि ॥ ॐ ह्मनन्थ थ्यावामकागीनिथथयनू ॥ ॥ ॐ कूँउग ॥

ॐ सिनिमन्त्रमाग ८ स्वाहा ॥ अभनयन्धसंपूजाम निकस्य । धेनुमुद्रावाद्यपूर्वकं
॥ धूप ॥ यात्रम निकस्य ॥ धेनुमुद्रा ॥ ॥ वनस्पतिरसात्पन्नागंधाढ्य गन्धोत्तमं आ
घ्रेयं सर्वदेवानां धूपायं प्रतिगृह्यतां ॥ दश्याद्विशहालग स्वपयन ॥ ॥ दी
पयात्रम निकस्य ॥ धेनुमुद्रा ॥ सुप्रकाशोमहादीप सर्वतस्तिमिरापहं । सवाह्याभ्य
न्तरंज्योति दीपायं प्रतिगृह्यतां ॥ त्रैलोक्यदीपयष्टं स्वावासहाग स्वपयन ॥ ॥

नैवेद्यम निकस्य ॥ धेनुमुद्रा ॥ नैवेद्यसूर्त्तिं संदवी नानाद्यसमंयितं कृस्वार्ने
वद्यं प्रतिगृह्यतां ॥ दश्वाम्बुग स्वपयन ॥ जवनिथ द्विनं ॥ ताम्बूलम निकस्य
॥ धेनुमुद्रा ॥ ता मादनकपूग मुयूग स्वाग सर्म विनं । संख्याबिनं सुगन्ध्य नाम्बू
लं प्रतिगृह्यतां ॥ दश्वासंमूखं स्वपयन ॥ आरात्रिकंम निकस्य ॥ धेनुमुद्रा ॥
नवाल्मनात्रिवहिमन्त्र गनवंसपूजा ॥ घौ भवादनयूर्वकमूलविद्यासन्ध ॥

समसत्वचक्रचक्रे लियूजन्दवीनवात्मिकं ॥ आचात्रिकमिदं पूर्व्वं गुह्यतनम
मन्निर्द्वय ॥ ॐ नियथनदवामसमस्तकायविक्रामनयूर्द्ध्वकं मायादगल
समस्तं नवथानियाजयविनियूजसर ४ स्थापनी ॥ ऊथल्लक्कि ऊयक्षान ॥ ॥
नान्दीवदात्यादि ॥ नर्ल्ले दिऊ पूर्व्वकं पंचमुद्रायायन म्पदिल्लात्रिक विधि ॥
स्मयन्यानक्लाश्रय ॥ श्व्याक्लयकंग ॥ त्रिलक्ष्मि मन्त्रन ॥ पूजनर्पन ॥ ह

स्नन ॥ पीनप्रगा ॥ पंच मुद्रा ॥ नकानक ॥ ॐ नित्याचात्रिकविधिसमाप्तं
॥ ॥ संवत् ८२२ चैत्रकृष्ण १ श्वाव थकुन्हु वाकूवाहाया ॐ नसिंहन श्री वायपतिनाउ
नन्दउपाध्याययानथ्व सकूवियाडना ॥

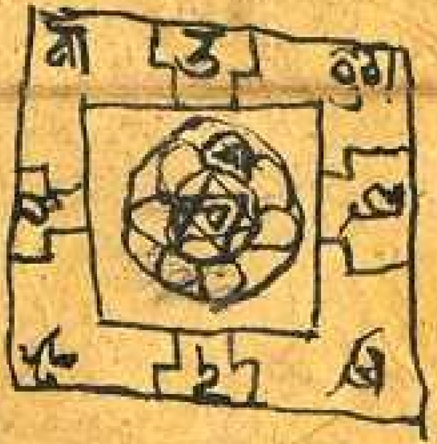

मम
म लनयायह